प्रयागराज स्थित मोतीलाल नेहरू नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के 19 वें दीक्षांत समारोह में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

मोतीलाल नेहरू, नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, प्रयागराज के दीक्षांत समारोह में, हमारे बीच में लोक सभा के माननीय सांसद श्रीमती केशरी देवी पटेल जी, आज के समारोह के विशिष्ट अतिथि, श्री विनोद कुमार सिंह जी, जो प्रोफेसर्स आईआईटी, कानपुर से हमारे बीच में आए हैं, जिन्होंने लंबे समय तक कैमेस्ट्री एवं अन्य विषयों में एक विस्तृत रिसर्च किया है, इनोवेशन किया है। प्रोफेसर रमाशंकर जी, जिन्होंने अलग-अलग देश के आईआईटीज में और अभी चेयरमैन ऑफ बोर्ड, गवर्निंग प्रयागराज सिनेट के अनुभवी डायरैक्टर, जिन्होंने मेडिकल टेक्नोलॉजी में बहुत बड़ा परिवर्तन किया है, जिसके सार्थक परिणाम आने वाले समय में मिलेंगे तथा इस परिवर्तन से भारत और विश्व में एक कीर्तिमान स्थापित होगा।

कुलसचिव डॉ. रमेश पांडे जी, डीन, लक्ष्मीकांत मिश्रा जी, जस्टिस, संजय सिंह जी, सभी अधिकारीगण, यहां पर आए सभी विशिष्ट अतिथिगण, इस संस्थान के सभी प्रोफेसर, डीन, फैकल्टी मैम्बर्स और इस संस्थान में पढ़ने वाले भारत के प्रतिभावान नौजवान, जो आने वाली 21वीं सदी में आपने कार्यों, इनोवेशंस और अपने सामर्थ्य से भारत का नाम रौशन करेंगे। 21वीं सदी भारत की सदी हो, इस सपने को पूरा हमारे नौजवान विद्यार्थी करेंगे।

इस धरती का अपना महत्व है। प्रयागराज की यह धरती आध्यात्मिक धरती है, एक पवित्र धरती है, जहां गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम है। यहां वर्ष 2025 में महाकुंभ मेला लगने वाला है। कई ऋषियों ने अपनी तप-तपस्या और ज्ञान से भारत की संस्कृति और भारत के आध्यात्मिक ज्ञान को दुनिया में पहुंचाया है। आपका सौभाग्य है कि आपको इस प्रयागराज की धरती पर टेक्नोलॉजी की शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला है।

मैं उन नौजवानों को धन्यवाद देता हूं, जिनको अपने-अपने विषयों में गोल्ड मेडल्स मिले हैं। कई नौजवान श्री आर्यक मित्तल, कुमारी पलक मिश्रा, जिन्होंने कई गोल्ड मेडल्स प्राप्त किए हैं, मैं उन सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देता हूं, बधाई देता हूं। जिन्होंने आज इस संस्थान के अंदर उपाधि प्राप्त की है। यह उपाधि जो आपने प्राप्त की है, तो आपकी एक सिद्धि पूरी हुई है।

लेकिन एक सिद्धि आपकी और है, जब आपके प्रयासों से, आपकी शिक्षा से, आपके सामर्थ्य से आपने संस्थान के अंदर अपने गुरुजनों से जो कुछ भी टेक्नीकल शिक्षा प्राप्त की है, उसके अनुभव का लाभ देश को मिले, समाज को मिले और जिन माता-पिता ने आपको जन्म दिया है, उनका गौरव-सम्मान

कर सकें। क्योंकि आपके जीवन के अंदर माता-पिता का लालन-पोषण, गुरुजनों की शिक्षा, संस्कार और आने वाला समय में आपको खुद अपने पैरों पर खड़ा होकर अपने निर्णयों, फैसलों से जिंदगी की नई शुरुआत करनी है।

इसलिए जब डिग्री प्राप्त करके भारत का नौजवान निकलता है, तो जो कुछ भी उसने अपने संस्थान में शिक्षा प्राप्त की है, जो संस्कार प्राप्त किए हैं, अपने गुरुओं के ज्ञान, अनुभवों का लाभ प्राप्त किया है और हमेशा शिक्षक का प्रयास रहता है कि जो कुछ भी उन्होंने जिंदगी में सीखा है, जो कुछ भी अनुभव प्राप्त किए हैं, जो कुछ भी चुनौतियां उनके जीवन में रही हैं, उन चुनौतियों के समाधान की कुंजी वे विद्यार्थियों को देते हैं ताकि आने वाले समय के अंदर ये विद्यार्थी हर चुनौती का समाधान कर सके।

मुझे आज गर्व है कि भारत का 21वीं सदी का नौजवान दुनिया की हर चुनौती का समाधान करने में सक्षम हो रहा है। दुनिया के सारे देश इसलिए भारत की ओर देख रहे हैं। हमने यह सामर्थ्य, यह नया इनोवेशन, नया चिंतन, दुनिया को बताने का काम किया है।

जब कभी आपदा होती है, कोई संकट होता है या कोई चुनौती होती है तो कोई समय था कि जब हम पश्चिम देशों की ओर देखा करते थे कि उस आपदा का समाधान होगा, उस चुनौती का समाधान होगा। लेकिन हमारे नौजवानों ने दुनिया की बड़ी-बड़ी आपदाओं, कोरोना जैसी चुनौतियों का समाधान भारत ने किया। जब मैं भारत के बाहर जाता हूं तो लोग कहते हैं कि भारत की वैक्सीन ने हमारे हजारों-लाखों लोगों की जिंदगियों को बचाने का काम किया।

आज हर वह क्षेत्र, जो दुनिया का बदलता परिप्रेक्ष्य है, चाहे ऊर्जा की नई टेक्नोलॉजी का प्रश्न हो, चाहे जलवायु परिवर्तन का नया सेक्टर हो, मुझे डायरेक्टर साहब बता रहे थे कि अब चिकित्सा के अंदर जो नए इनोवेशन, नए रिसर्च आने वाले हैं, वह दुनिया के अंदर भारत की ताकत और सामर्थ्य को बतायेंगे। इसलिए आपकी बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। देश आपकी ओर देख रहा है। यह 21वीं सदी आपकी तरफ देख रही है।

और 21वीं सदी हमारे लिए महत्वपूर्ण इसलिए है कि 21वीं सदी में जब हम 100 साल पूरे करने वाले होंगे तो आज़ादी के 75 वर्षों में हमने जो कुछ भी प्राप्त किया, वह समय हमारे लिए चुनौतियों का था। कई चुनौतियों से लड़ने व कई चुनौतियों का सामना करने के लिए हर तरीके का सामर्थ्य हमने जुटाया।

इस 75 वर्ष की यात्रा में हमने, लोकतंत्र के माध्यम से देश को एक ऐसा संविधान दिया, जो आज दुनिया का सबसे बड़ा संविधान है। हम दुनिया की सबसे बड़ी डेमोक्रेसी हैं। डेमोग्राफी के रूप में हम बड़े हैं। इसलिए 'मदर ऑफ डेमोक्रेसी' के रूप में भारत की पहचान आज दुनिया के अन्दर है। इस लोकतंत्र

के माध्यम से ही हमने जो कुछ भी परिवर्तन किया, वह लोकतांत्रिक विचारों, पद्धतियों से किया, सामूहिकता के साथ किया, सबने मिलकर किया। यह हमारा सामर्थ्य है, हमारी ताकत है। दुनिया के अन्दर भारत एक ऐसा देश है, जहाँ इतनी विविधताएं हैं।

इतनी विविधताएं दुनिया में कहीं नहीं हैं। इतनी विविधताएं, विशालता, हमारी संस्कृति और दुनिया के हर धर्मों के अनुसार पूजा-अर्चना करने वाले लोग भारत में रहते हैं। इसलिए संविधान बनाते समय हमारे मनीषियों ने कहा था कि दुनिया में भारत की एक अलग पहचान होगी। यह पहचान संविधान के रूप में होगी, लोकतंत्र के रूप में भी होगी। उस समय के विचारकों ने कहा था कि हमारे भारत के नौजवानों के कारण, उनके नये इनोवेशन, नये रिसर्च, नये सामर्थ्य, उनकी बौद्धिक क्षमताओं के कारण आने वाले समय में हमारे नौजवानों की ताकत के कारण भारत नेतृत्व करेगा।

आज हम यह सपना देख रहे हैं। मैं नौजवानों की आँखों में यह सपना देख रहा हूँ। जब मैं नौजवानों के बीच में जाता हूँ, तो मुझे एक नयी ऊर्जा मिलती है। नौजवानों ने किस तरह से, अपने-अपने सेक्टर के अन्दर, जो कुछ भी नया हो सकता है, अपनी पूरी श्रम-शक्ति से, कड़ी मेहनत से, उसे करने का प्रयास किया है। लेकिन अभी चुनौतियाँ बहुत हैं। उन चुनौतियों से लड़ने का सामर्थ्य भारत के नौजवानों में है।

हम केवल भौतिक संसाधनों के आधार पर देश को नहीं चला रहे हैं। हम अपने देश को अध्यात्म, संस्कृति, सामूहिकता के आधार पर, वसुधैव कुटुम्बकम् की संस्कृति के आधार पर चला रहे हैं। पूरे विश्व को साथ लेकर चलने के संस्कार और संस्कृति के कारण पूरी दुनिया के अन्दर हमारी एक अलग पहचान बनने लगी है।

मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ कि भारत के जो कैम्पस हैं, चाहे आईआईटी हो, ट्रिपल आईटी हो, एमएनआईटी हो, इंजीनियरिंग कॉलेजेज हों, मेडिकल कॉलेजेज हों, साइंस एंड टेक्नोलॉजी के रिसर्च सेन्टर्स हों या सामान्य विश्वविद्यालय हों, उन सब विश्वविद्यालयों के अन्दर आने वाली हमारी शिक्षा की जो पद्धति है, उसमें हर विश्वविद्यालय हमारे प्रत्येक चुनौतियों के समाधान के केन्द्र बनेंगे।

हमारे हर शैक्षिक संस्थानों में पढ़ने वाला नौजवान एक कुशल नौजवान होगा, एक स्किल्ड नौजवान होगा, जिसकी बौद्धिक क्षमता होगी और जिसकी कार्य-कुशलता में गुणवत्ता भी होगी।

उनमें एक नयी सोच और नया चिन्तन भी होगा, उनमें एक नया आत्मविश्वास भी होगा। यहाँ कैम्पस में दिखने वाले विद्यार्थियों के सामर्थ्य और ताकत को मैं देख रहा हूँ।

देश की इस धरती पर पढ़ने वाले विद्यार्थियों को, जहाँ बड़े-बड़े लेखक, राजनीतिज्ञ, ऋषि-मुनि हुए, ऐसे संस्कार और संस्कृति मिली है।

मुझे आशा है कि आज आप यहां से जो उपाधि प्राप्त करके निकलेंगे, उसकी बहुत बड़ी जिम्मेदारी समाज ने आपके ऊपर डाली है। यह जिम्मेदारी सिर्फ आपकी जिम्मेदारी नहीं है, यह हमारे सभी नौजवानों की जिम्मेदारी है। जिस समय आजादी की लड़ाई लड़ी गई थी, उस समय 18-21 साल का नौजवान देश की आजादी के लिए लड़ रहा था। उस समय उस नौजवान का संकल्प था कि मैं देश को आजाद कराकर ही छोड़ूंगा।

उस नौजवान ने एक लंबी लड़ाई लड़ी, एक संकल्प के आधार पर लड़ी। ऐसा ही संकल्प आपके मन में होना चाहिए। आपके मन में यह संकल्प होना चाहिए कि भारत विज्ञान, टैक्नोलॉजी, हर क्षेत्र के अंदर दुनिया का नेतृत्व करेगा और यह नेतृत्व करने की जिम्मेदारी इस समाज ने मुझे दी है। इस मनोभाव से आप यहां से निकलेंगे कि मुझे ही कुछ परिवर्तन करना है, मेरे में सामर्थ्य है, मेरे में जो सोच है, चिंतन है, जो संस्कार हैं, इस भारत के अंदर हर परिवर्तन में मेरा ही योगदान होगा, इस सामर्थ्य के साथ जब आप आगे बढ़ेंगे, तो नए आत्मनिर्भर भारत का जो विचार है, जो वसुधैव कुटुम्बकम का विचार है कि सारा विश्व भारत की ओर देखे, इस विचार के साथ ही हम सारे विश्व को साथ लेकर चलेंगे।

इसी मनोभाव से आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं, बहुत-बहुत बधाई।